ऑडियो विडियो रिकोर्डिंग एवं कलाकार विवरण पत्र

फोल्डर नः- 02 दिनांक ः-
ट्रैक नः- 200M0001
ट्रैक समयावधि ः- 33:32
कलाकार का नामः- सुभान खान S/O छुभान खां
पिता का नाम ः- गाँव बड़नावा चारणान् तेह- पचपदरा
जिला – बाड़मेर

~~[illegible]~~ ः-

सहायक कलाकार ः-
विडियो रिकोर्डिंग समय ः-

विषय ः- कथा (सेठ और सुनार)
विशेष विवरण ः-
दिनांक ः- 02-07-2021
स्थान ः-

यह कथा लकड़पंचायती नाम से प्रसिद्ध है। कथा सेठ और सुनार के न्याय पर आधारित है। कथा में सत्य और झूठ के पक्ष को उजागर किया गया है तथा जीत हमेशा सत्य की होती है।

कथा में एक गाँव में एक सेठ और एक सुनार रहता है तथा दोनों के घर आस-पास है। सेठ व्यापार के लिए दूसरे शहर जाता है। एक दिन सेठानी तलाब से पानी लेने के लिए घर से निकलती है तो सुनार उसे रास्ते में मिलता है तो वह सेठानी से बात करता है और कहता है कि इस समय तुम ये सोने का बाउला पहने पानी लेने जा रही हो अगर कोई चोर डाकू आ गये तो लूट कर भाग जाएगा तो वह अपने गले से बाउला निकालकर सुनार को सौंप देती है तथा पानी लेने चली जाती है। वापिस आकर सुनार से बाउला मंगती है तो सुनार कहता तुमने मुझे कब दिया मेरे पास तो कोई भी बाउला नहीं है सेठानी उसे बहुत तर्क देती समझाती है लेकिन वह नहीं मानता है और बाउला नहीं देता है। सेठानी थक कर वापिस घर चली जाती है कुछ दिनों बाद सेठ घर आता है और सेठानी को उदास देखकर उदास होने का कारण पुछता है तो सेठानी सेठ से सारी बात बताती है तब वह अपनी पत्नी से कहता है तुम चिंता मत कर हम गाँव के मुख्या से न्याय करवाएँगे। अब दूसरे दिन गाँव के सभी लोग इकट्ठे होते है गाँव का मुख्या भी वह उपस्थित होता है तथा सबसे पहले उस सेठ और सेठानी से कहता है कि यह न्याय पंच का गोला है पहले आप उठाओ अगर आप सच्चे हो और सच्च में आप ने उस सुनार को बाउला सौंपा था तो तुम इसका कोई असर नहीं होगा। नहीं तो यह गोला आपके चिपक जाएगा। उस तरह सेठ और सेठानी दोनों बारी-बारी गोला उठाते तो उस पर कोई भी असर नहीं होता है फिर मुख्या उस सुनार और

उसकी पत्नी उस गोले को उठाने के लिए कहता है तथा उन्हे पहले से ही इस न्याय के बारे मे पता होता है और वे पहले से ही उस सोने को पिघलाकर एक सरिया बनाकर लकड़ी के अन्दर डाल देते है तथा उनकी गोला उठानी बारी आती है तो सुनार उस लकड़ी को सेठ को पकड़ा देता है तो उन दोनो पर भी उस गोले का असर नही होता है। सभी लोग अपने घर चले जाते है लेकिन सेठ कहता है कि न्याय हुआ नही है और मैं दूसरे के मुख्या से फिर से न्याय करवाऊँगा सुनार कहता ठीक है मैं दूसरे गाँव भी चलने को तैयार हूँ। इसप्रकार वे दूसरे गाँव के मुख्या के पास जाते है और सारी बात बताते है। दूसरे दिन न्याय सुनने गाँव के सारे लोग एकत्रित होते है और मुख्या बोलता है कि देखो यह है न्याय का ढोल इसको उठाकर पूरे गाँव का चक्र लगाना पड़ेगा तथा जो सच्चे है उस पर कोई असर नही होगा नही तो यह ढोल सिर पर चिपक जाएगा। तो सबसे पहले सेठ और सेठाणी उस ढोल को सिर पर उठाकर चक्र लगाते है तो उस ढोल के अन्दर एक पढ़ लिखा लड़का होता है वे जो भी बाते करते है वह लिख देता है। सेठ सेठाणी तो बाते करते कि न्याय मिलेगा या नही मिलेगा सेठाणी कहती है कि मैंने अपने हाथों से सुनार को बाउला दिया और सुनार और उसकी पत्नी की बारी आती है तो गाँव का चक्र लगाते हुए आपस मे बाते करते कि इस बार फिर से उस बाउले के सोने के डीब्बे मे डाल दिया है तथा वह डिब्बा फिर से सेठ के हाथ पकड़ा दिया है अब ये ढोल हमारे नही चिपक सकता है। तथा यह भी वह लड़का लिख देता है। अब उस लड़के द्वारा लिखे दोनो पन्नो को पढ़ता है तो मुख्या को पता चल जाता है तथा उस डीब्बे से सोना निकलवाने के लिए एक आदमी अपने पेट मे दर्द होने का नाटक करता है और कहता है कि घी के बिना मेरा पेट सही होता है तो एक आदमी उसी डीब्बे लेने लगता है तो सुनार कहता है कि यह मेरी गाय का घी है फिर भी उस डीब्बे को बड़े वर्तन मे खाली करते है तो उसके अन्दर से सोना निकला जाता है अतः सेठ सेठाणी को न्याय मिल जाता है। वे खुश होकर अपने घर जाते है।